RNI No.RAJHIN/2012/44901

Postal Reg. No. जयपुर सिटी/403-2024-26

निवेश पत्रिका

निवेश करें लगातार, सपने करें साकार

वर्ष : 12 अंक 11 www.mftoday.com हिन्दी मासिक जयपुर, 1 मई 2024 कुल पृष्ठ : 8 मूल्य : 10 रुपए email : niveshpatrika@mftoday.com

सम्पादकीय

चढ़ते सूरज को सलाम

वर्तमान में भारतीय अर्थव्यवस्था की बात की जावे तो रोज नई ऊंचाइयां छू रही है। प्रत्येक चीज नई बुलंदियों की तरफ अग्रसर हो रही हैं। चाहे कोई सा भी क्षेत्र हो भारत में सभी आगे बढ़ रहे हैं। चाहे वह पढ़ाई के प्रति विद्यार्थियों का उच्च श्रेणी के अंक प्राप्त करना हो या फिर सोना, चांदी, गैस, शेयर मार्केट इत्यादि का उछाल, सभी ने बुलंदियां छूने का प्रयत्न किया है।

भारतीय शेयर बाजार की उम्र करीबन 38 वर्ष है। सबसे अधिक जनसंख्या और युवा वर्ग हमारे देश में हैं। इससे अंदाजा लगाया जा सकता हैं कि हर वस्तु का सबसे ज्यादा उपभोक्ता भारत ही है। तभी तो कयास लगाये जा रहे हैं कि भारत से अधिक खपत किसी अन्य देश की नहीं है। इन्ही कारणों को भुनाने के लिए कई कम्पनियां भारत में आना चाह रही हैं और भारतीय कम्पनियां भी लाभ कमा रही हैं।

भले ही अंतर्राष्ट्रीय बाजार अनेक अनिश्चतताओं के कारण नकारात्मक जोन में हो लेकिन भारतीय अर्थव्यवस्था प्रतिदिन तरक्की कर रही है।

गौर करने की बात है जिस प्रकार भारत में आर्थिक ढांचे में तेजी से बदलाव आ रहे हैं, उसे देखकर लगता हैं कि भविष्य में भी हरेक क्षेत्र में तेजी देखने को मिलेगी। जिस प्रकार बदलाव की लहर जारी है और अगर वास्तविक बदलाव हो जाता है तो आर्थिक परिदृश्य में अचानक तेजी नजर आएगी।

यहां ध्यान देने योग्य बात यह है कि जिसने भी आ रहे बदलाव को धीरे-धीरे सहन कर लिया उसकी नैया पार हो ही जायेगी। यह हर युग का एक अटल सत्य रहा है। परिणामस्वरूप विकास दर में वृद्धि तो होनी ही हैं। इन सभी बातों को ध्यान में रखकर मेरा कहना यही है कि जिस प्रकार शेयर बाजार में निरंतर वृद्धि देखने को मिल रही हैं उसी तरह म्यूचुअल फंडों में भी उछाल आया है। अनुमानतः जिसने भी रूपया लगाया है उसे अच्छा लाभ तो मिलना ही है। हां, लाभ उसी को मिलेगा जो पैसा लगा चुका है और लगा रहा है। जो किसी के इंतजार में बैठे हैं उनके बारे में कुछ नहीं कहा जा सकता।

बच्चों की शादी व पढ़ाई हेतु शीघ्र निर्णय लें

एक वर्ष का बच्चा होते ही अगर
100 रु. प्रति दिन निवेश करें तो 15 वर्ष बाद (बच्चें की उम्र 16 वर्ष होने पर) पायें रु. 15 लाख लगभग।
और यदि यही निर्णय
पांच वर्ष बाद लेते हैं 100 रू. प्रति दिन 10 वर्ष बाद (बच्चें की उम्र 16 वर्ष होने पर) पायें
रु. 7 लाख लगभग। #

गणना मात्र 12% ब्याज प्रतिवर्ष चक्रवृद्धि दर सें की गई है....

संपूर्ण जानकारी हेतु संपर्क करें मो. 98290-40424, 75680-90258

निर्भर स्कीम चयन एवं बाजार जोखिम पर,निवेश करने से पहले ऑफर दस्तावेज पूर्णरूप से पढ़ लें।

ज्ञान के मोती

1. **बचत-** खर्च करने के पश्चात जो बचे उसे बचत ना करे। बल्कि बचत करने के पश्चात जो बचे उसे ही खर्च करे।

2. **खर्च-** खर्च आवश्यक व दीर्घकालीन उपयोगी वस्तुओं पर ही करें। अन्यथा बिना जरूरत की चीजों पर खर्च करेंगे तो शीघ्र बेचना पड़ सकता है। या कबाड़ी को देना पड़ सकता है।

3. **कमाई-** वर्तमान समय में कभी भी एक अकेली आय पर निर्भर न रहे। वरन् यह जरूरी है। अपने निवेश को अपनी आय का दूसरा साधन (जरिया) बनावें ।

4. **जोखिम** - जीवन में हर मोड़ पर जोखिम है । अतः थोड़ा जोखिम लेना जरूरी है। क्योंकि जोखिम से रिटर्न की सम्भावना अधिक रहती है।

5. **निवेश** - सभी सेव को एक टोकरी में रखने से उनके खराब होने की सम्भावना अधिक रहती है। अर्थात् निवेश भी डाइवर्सिफाइड (विभिन्न सेक्टरों) में होना चाहिये।

इनसाईड स्टोरी

2
पैसा डबल करने वाले निवेश के 5 रास्ते, रिस्क की समझ...

3

जाने, म्यूचुअल फंड में निवेश करने के लाभ जो निवेशकों को निवेश ...

4
म्यूचुअल फंड निवेशकों के लिए ध्यान रखने योग्य बातें...

5
युवाओं को निवेश करते समय इन बातों का रखना चाहिए ध्यान....

6
बैंक लॉकर से जुड़े नियम आपको जरूर जानने चाहिए...

7
होम लोन के बोझ से पाना चाहते हैं जल्द मुक्ति, करें ये 9 उपाय...

8
निवेशकों को वित्तीय सलाह...

अपनी बचत को सही निवेश कर अपने गोल को पूरा करने हेतु सम्पर्क करें: - 8287 099 099

निर्भर स्कीम चयन एवं बाजार जोखिम पर, निवेश करने से पहले ऑफर दस्तावेज पूर्णरूप से पढ़ लें।

पैसा डबल करने वाले निवेश के 5 रास्ते, रिस्क की समझ, टाइमिंग और भरोसा है तो इनसे बनाएं पोर्टफोलियो

लोग कम से कम समय में पैसा डबल करने के तरीके ढूंढते हैं। पैसा डबल करने के यूं तो कई तरीके हैं, लेकिन भरोसेमंद निवेश, रिस्क, टाइमिंग ऐसे कई फैक्टर्स हैं, जिन्हें ध्यान में रखकर चलना चाहिए। आप शॉर्टकट्स अपनाकर पैसे बनाना ट्राई कर सकते हैं, लेकिन इसमें बहुत जोखिम होता है, कोई गारंटी नहीं होती है। आप अपनी कमाई से चुटकियों में हाथ धो बैठ सकते हैं। पैसा डबल करने के लिए आपको धैर्य और सही निवेश रणनीति की जरूरत होगी। निवेश के 5 ऐसे ऑप्शन हैं, जो आपका पैसा डबल कर सकते हैं, बस आपके अंदर इसके लिए थोड़ी समझदारी होनी जरूरी है।

1. म्यूचुअल फंड में निवेश

युवा निवेशकों के बीच म्यूचुअल फंड का निवेश काफी पॉपुलर है। म्यूचुअल फंड्स अलग-अलग सोर्सेज़ से फंड लेकर बॉन्ड्, स्टॉक और डेट में निवेश करते हैं। इसमें आपको हाई रिटर्न मिलता है। बाजार से लिंक होने के चलते इसमें मार्केट से जुड़ा रिस्क भी होता है, लेकिन अच्छे रिटर्न के लिए बड़ी संख्या में निवेशक इसे अपनाते हैं।

पैसा डबल करने के लिए इसमें फंड का पीरियड और टर्म दोनों मायने रखते हैं। फंड की परफॉर्मेंस के हिसाब से आपका पैसा 4 से 5 साल में डबल हो सकता है।

2. स्टॉक मार्केट में निवेश

स्टॉक मार्केट में निवेश पर रिटर्न अधिक जोखिम के साथ ही मिलता है। आप इसके तहत शेयर बाजार में लिस्टेड कंपनियों के शेयरों में निवेश करते हैं। स्टॉक मार्केट तेजी से पैसा बनाने की जगह है, लेकिन इसमें रिस्क भी उतना ही ज्यादा है। सही रणनीति के साथ सही जगह निवेश करें तो आपको एनुअली डबल डिजिट में रिटर्न मिल सकता है। लेकिन आपको इसके लिए थोड़ी फंडामेंटल और टेक्निकल समझ होनी चाहिए। आप मार्केट एक्सपर्ट्स की सलाह भी ले सकते हैं।

3. फिक्स्ड डिपॉजिट

फिक्स्ड डिपॉजिट ट्रेडिशनल इन्वेस्टमेंट टूल है। एफडी पर आपका रिटर्न दूसरे इन्वेस्टमेंट के मुकाबले थोड़ा स्लो हो सकता है। लेकिन अच्छी बात है कि एफडी कुछ सेफ इन्वेस्टमेंट टूल्स में से एक माना जाता है। यहां आपको गारंटीड रिटर्न भी मिलता है। टैक्स चुकाने के पश्चात बहुत कम रिटर्न मिलता है।

4. नेशनल सेविंग्स सर्टिफिकेट

पोस्ट ऑफिस की नेशनल सेविंग्स सर्टिफिकेट (NSC) एक बढ़िया स्कीम है और निवेश का बेहतर ऑप्शन हो सकता है। कई बार ये स्थिति आती है, जब आपके पास पैसा होता है, लेकिन किसी स्कीम में एक तय लिमिट तक आप पैसा डाल सकते हैं। लेकिन, पोस्ट ऑफिस की इस स्मॉल सेविंग्स स्कीम्स में निवेश की कोई मैक्सिमम लिमिट नहीं है। साथ ही इसमें मल्टीपल अकाउंट खुलवाए जा सकते हैं। टैक्स छूट भी मिलती है। आपको कंपाउंडिंग का भी फायदा मिलता है।

5. रियल एस्टेट में निवेश

रियल एस्टेट यानी हाउस प्रॉपर्टी, या जमीन वगैरह में निवेश करना आज भी सबसे सही और गारंटीड निवेश माना जाता है। ये भी निवेश का ट्रेडिशनल तरीका है। प्रॉपर्टी में निवेश एक बड़ा खर्च और जिम्मेदारी है, ऐसे में हर किसी के लिए ये संभव नहीं हो पाता, लेकिन अगर आप कर सकते हैं तो निवेश का ये तरीका जरूर अपना सकते हैं। एक तो आपको प्रॉपर्टी के दाम बढ़ने से फायदा होगा। कुछ सालों में प्रॉपर्टी की कीमत दोगुनी हो सकती है। वहीं अगर आप किराये पर जमीन या घर देते हैं, तो ये आपके लिए रेगुलर इनकम पैदा कर सकता है।

निवेश के 11 नियम

1. निवेश उद्देश्यों के अनुरूप : निवेश हमेशा निवेशक को अपनी आवश्यकता, जोखिम वहन करने की क्षमता, भविष्य की योजनाओं, निवेश उद्देश्य के अनुरूप एवं निवेश के साधनों को सोच-समझकर करना चाहिए ना कि अपने रिश्तेदारों, सगे सम्बन्धियों एवं मित्रों की देखा-देखी ।

2. निवेश का महत्व : जितना आप अपने व्यापार या नौकरी में कार्य करके कमाते है उससे कहीं ज्यादा आप अच्छे निवेश के जरिए (लम्बे समय में, दूरदर्शिता से किया गया हो) कमा सकते है।

3. मंदी में लाभदायक : ज्यादातर निवेशक मंदी के समय बीस हजार रूपये निवेश करने में भी हिचकिचाते है और वही निवेशक बाजार जब तेजी का रूख लिए होता है, तो बेझिझक बीस लाख रूपये भी निवेश कर देते है। अतः निवेश मंदी मे लाभदायक रहता है। मंदी में निवेश से ही सम्पदा बनती है ।

4. निवेश का मूल्यांकन करें जो भी निवेश किया : जाए वह समय पर मूल्याकंन पर किया जाना चाहिए। समय-समय पर आपके द्वारा किये गये निवेश का पुर्नमूल्यांकन करते रहना चाहिए। अच्छे निवेश को रखकर खराब निवेश को निकालना चाहिए परन्तु निवेशक इसका विपरीत ही करते है जो भविष्य में हानिकारक सिद्ध होता है।

5. निवेश डायवर्सीफाइड होना चाहिए: निवेश एक जगह ना होकर भिन्न-भिन्न अनेक जगह परिसमपत्तियों (सोना, शेयर्स, सम्पत्ती, एफ. डी. पी. पी. एफ. एवं इंश्योरेन्स) में होना चाहिए। इन परिसम्पत्तियों को निर्धारित समय पर पुर्नमूल्याकंन करना और उन्हे पुनः सन्तुलित करना एक समझदार निवेशक की पहचान है ।

6. निवेश अवधि के अनुसार: मार्केट की टाईमिंग करना कठिन ही नहीं, असम्भव सा कार्य है । अतः निवेश हमेशा अपने उद्देश्य निवेश अवधि अनुसार को ध्यान में रख कर करना चाहिए।

7. निवेश भविष्य के अनुसार हो निवेश भविष्य की : संभावनाओं का आंकलन करके ही किया जाना चाहिए ।

8. निवेश की योजना को समझें: शेयर में निवेश के समय कम्पनी के बिजनेस प्लान, विकास दर प्रबन्धन गुणवत्ता को अवश्य परखे ।

9. निर्णय जल्दबाजी में न लेंवे: अपने अच्छे निवेश को मीडिया की खबरों, मित्रों, ब्रोकरों एवं मार्केट के उतार-चढ़ाव से घबराकर जल्दीबाजी में बेचने का निर्णय न लें। यह एक गलत निर्णय साबित होगा ।

10. निवेश एवं बीमा : दोनो अलग-अलग होने चाहिए बीमा जोखिम एवं सुरक्षा हेतु करते है एवं बीमा प्रिमियम एक खर्चा है न कि निवेश ।

11. निवेश प्रमाणित वित्तिय सलाहकार के द्वारा सलाह लेकर करें: निवेश हमेशा एक प्रशिक्षित अनुभवी एवं निष्पक्ष सलाह देने वाले सलाहकार से सलाह लेकर ही करें।

निर्भर स्कीम चयन एवं बाजार जोखिम पर, निवेश करने से पहले ऑफर दस्तावेज पूर्णरूप से पढ़ लें।

जाने, म्यूचुअल फंड में निवेश करने के लाभ जो निवेशकों को निवेश करने के लिए करते है प्रेरित

म्यूचुअल फंड की कई स्कीमों ने बेहतर रिटर्न देकर लोगों को बहुत ज्यादा आकर्षित किया है, जिससे अधिकांश लोग म्यूचुअल फंड में निवेश करने के मुख्य लाभ के बारे में जानना चाहते हैं।

सुरक्षित निवेश की मिलती है गारंटी

म्यूचुअल फंड में SEBI की बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका होती है,जो म्यूचुअल फंड की सभी योजनाओं पर अपनी नजर रखती है और समय-समय पर निवेशकों की आवश्यकता अनुसार योजनाओं का निर्माण करती है। म्यूचुअल फंड सेबी द्वारा पंजीकृत की गई है, इसलिए सेबी म्यूचुअल फंड को नियंत्रित करती है जिससे निवेश की गई राशि पूर्ण रूप से सुरक्षित रहती है।

पावर ऑफ कंपाउंडिंग की मिलती है सुविधा

अन्य निवेशों के मुकाबले म्यूचुअल फंड निवेशकों को एक अच्छा रिटर्न उपलब्ध करवाती है। म्यूचुअल फंड में निवेशक जितनी लंबी अवधि के लिए निवेश करेंगे उसी आधार पर रिटर्न तेजी से बढ़ती है, जिससे निवेशकों को पावर ऑफ कंपाउंडिंग की सुविधा मिलती है।

कम कीमत पर मिलती है बेहतर विकल्प की सुविधा

म्यूचुअल फंड निवेशकों को कम कीमत पर अच्छे विकल्प की सुविधा उपलब्ध कराती है। जिससे निवेशकों को स्टॉक मार्केट में निवेश करने के लिए

अधिक पूंजी की आवश्यकता नहीं होती निवेशकों के लिए कम पूंजी से अच्छा रिटर्न एक बेहतरीन विकल्प है। इसका एक और फायदा यह है, कि आप अपने बजट के अनुसार लगभग 500 से 1000 रुपए की SIP से शुरुआत कर सकते हैं। इसके लिए आपको अधिक धनराशि की भी आवश्यकता नहीं होती और कुछ सालों बाद उसका बड़ा फायदा देखने को मिलता है।

उद्देश्य पूर्ति में है सहायक

किसी भी निवेशक द्वारा म्यूचुअल फंड में निवेश करने का एक विशेष उद्देश्य होता है। निवेशक म्यूचुअल फंड स्कीमों में एक निश्चित समय अवधि के लिए निवेश करते हैं, ताकि उन्हें अपने लक्ष्य प्राप्ति में आसानी हो। ये उद्देश्य निवेशकों की आवश्यकता अनुसार होती है, कभी-कभी निवेशक नए बिजनेस के लिए अधिक धनराशि के उद्देश्य, घर एवं कार खरीदने के उद्देश्य से निवेश करते हैं।

सुविधाजनक निवेश प्रक्रिया

म्यूचुअल फंड के माध्यम से निवेशक आसानी से किसी भी विश्वसनीय ऐप अथवा एजेंट की मदद से निवेश कर सकते हैं। म्यूचुअल फंड की प्रक्रिया अन्य निवेश विकल्पों के द्वारा बड़ी ही सरल होती है।

वर्तमान समय में ऐसे कई प्लेटफार्म उपलब्ध है, जिसके माध्यम से निवेशक आसानी से कई म्यूचुअल फंड की स्कीम खरीद सकते हैं व साथ ही ट्रैकिंग, रिटर्न एवं ग्रोथ की तुलना भी कर सकते हैं। वर्तमान में ऑनलाइन की सुविधा ने म्यूचुअल फंड में निवेश करने की प्रक्रिया को और अधिक सरल बना दिया है।

रिसर्च एवं एनालिसिस के लिए समय की बचत

यदि निवेशक म्यूचुअल फंड के द्वारा अपनी पूंजी फंड में निवेश कर रहे है, तो उसे बाजार के उतार-चढ़ाव के लिए किसी भी प्रकार की मॉनिटरिंग की आवश्यकता नहीं होती और ना ही निवेशक को रिसर्च एवं एनालिसिस के लिए अलग से समय निकालने की आवश्यकता होती है। बस एक बार निवेश करने के बाद निवेशक 6 महीने अथवा 1 वर्ष के बाद कभी भी अपने पोर्टफोलियो की जांच कर सकते हैं।

टैक्स बचत

म्यूचुअल फंड में निवेश करने का एक सबसे बड़ा लाभ यह है, कि ELSS के द्वारा टैक्स की भी बचत होती है।

ELSS टैक्स सेविंग का एक ऐसा माध्यम है, जिसके द्वारा निवेशक म्यूचुअल फंड की किसी भी स्कीम में टैक्स बचत का लाभ उठा सकते हैं।

निवेश में रहती है विविधता

म्यूचुअल फंड के अंतर्गत शेयर, बांड एवं स्टॉक जैसे कई क्षेत्र उपलब्ध होते हैं, जिसमें निवेशक अपने पसंदीदा क्षेत्र में आसानी से निवेश कर सकते हैं। यहां निवेशक अपने बजट के अनुसार शेयर अथवा फंड खरीद सकते हैं।

पैसे निकालने की सरल प्रकिया

म्यूचुअल फंड के द्वारा निवेश की गई राशि निवेशक जरूरत पड़ने पर आसानी से निकाल सकते हैं। अन्य निवेश ऑप्शन में निवेशक समय अवधि समाप्त ना होने पर अपने द्वारा निवेश की गई राशि नहीं निकाल सकते हैं। परंतु म्यूचुअल फंड आपको ऐसी सेवाएं उपलब्ध करती है, जिससे जरूरत पड़ने पर निवेशक कभी भी पैसा निकल सकते हैं जो निवेशक के अकाउंट में लगभग 2 से 3 दिनों में दे दी जाती है। तरलता की इस सुविधा के कारण म्यूचुअल फंड लोगों को अपनी ओर आकर्षित करता है।

अपनी बचत को सही निवेश कर अपने गोल को पूरा करने हेतु सम्पर्क करें: - 91458 44141

Mutual Fund investments are subject to market risks, read all scheme related documents carefully.

सिबिल स्कोर रेंज को समझना है बेहद जरूरी

जितना हाई सिबिल स्कोर होता है, आपको पर्सनल लोन के साथ-साथ क्रेडिट कार्ड पर अच्छा सौदा मिलने की संभावना बढ़ जाती है।

भारत में सिबिल स्कोर या क्रेडिट स्कोर 300-900 के बीच कैलकुलेट किया जाता है। किसी भी इंसान को अपने क्रेडिट स्कोर को 900 के करीब लाने के हर संभव उपाय जरूर करने चाहिए। जितना हाई सिबिल स्कोर होता है, आपको पर्सनल लोन के साथ-साथ क्रेडिट कार्ड पर अच्छा सौदा मिलने की संभावना बढ़ जाती है। आपको किसी भी तरह का लोन मिलने में आसानी होती है। आइए यहां सिबिल स्कोर के रेंज और उसके मायने क्या हैं, को यहां समझते हैं।

NA/NH

इसका मतलब यह है कि यह या तो लागू नहीं है या उस शख्स की कोई हिस्ट्री नहीं है। अगर आपने क्रेडिट कार्ड का इस्तेमाल नहीं किया है या कभी लोन नहीं लिया है, तो आपका कोई क्रेडिट हिस्ट्री नहीं होगा।

350/549

अगर आपका स्कोर 350-549 की रेंज में है तो ऐसे CIBIL स्कोर को खराब स्कोर माना जाता है। इससे यह स्पष्ट होता है कि आपको क्रेडिट कार्ड बिल या लोन की ईएमआई चुकाने में देरी हो गई है। इस लिमिट में सिबिल स्कोर के साथ, आपके लिए लोन या क्रेडिट कार्ड पाना मुश्किल होगा क्योंकि आपके डिफॉल्टर बनने का जोखिम ज्यादा है।

550/649

अगर आपका सिबिल स्कोर 550-649 की रेंज में है तो इसे उचित सिबिल स्कोर माना जाता है। इससे पता चलता है कि आप समय पर बकाया भुगतान करने के लिए संघर्ष कर रहे हैं। हालांकि जब आप लोन के लिए अप्लाई करेंगो तो आपको महंगी ब्याज दर पर लोन लेना पड़ सकता है।

650/749

अगर आपका सिबिल स्कोर 650-749 के दायरे में है, तो आप सही रास्ते पर हैं। आपको अच्छा क्रेडिट व्यवहार प्रदर्शित करना जारी रखना चाहिए और अपना स्कोर और बढ़ाना चाहिए। इसके लिए आपको और वित्तीय अनुशासन का पालन करना चाहिए। इस स्कोर पर बैंक या ऋणदाता आपके क्रेडिट एप्लीकेशन पर विचार करेंगे और आपको लोन की पेशकश कर सकते हैं। हालांकि, लोन के लिए ब्याज दर पर बेस्ट डील पाने के लिए आपके पास अभी भी बातचीत की शक्ति नहीं हो सकती है।

750/949

अगर आपका सिबिल स्कोर 750-900 के दायरे में है तो इसे एक बेहतरीन क्रेडिट स्कोर माना जाता है। इससे यह पता चलता है कि आप नियमित रूप से क्रेडिट भुगतान करते हैं और आपकी पेमेंट हिस्ट्री शानदार है। बैंक आपको लोन और क्रेडिट कार्ड भी आसानी से ऑफर करेंगे। ऐसा इसलिए क्योंकि आपके डिफॉल्टर बनने का जोखिम सबसे कम है।

म्यूचुअल फंड निवेशकों के लिए ध्यान रखने योग्य बातें

म्यूचुअल फंड में निवेश धैर्य और जोखिम की बेहतर समझ की मांग करता है। हालांकि म्यूचुअल फंड में निवेश ऑप्शन की भरमार और बाजार के मौजूदा हालात को देखते हुए सही फंड का चुनाव आसान नहीं है। फिर भी म्यूचुअल फंड में निवेश से जुड़ी कुछ बुनियादी सावधानियों को ध्यान में रखेंगे तो आपको घाटा नहीं होगा।

कभी भी बड़ी रकम को एक साथ निवेश ना करें

एक निवेशक को इक्विटी में बड़ी रकम को एक साथ निवेश करने से बचना चाहिए। ऐसा इसलिए है क्योंकि बाजार में गिरावट आपके लिए मुश्किलें खड़ी कर सकता है। पहली बार के निवेशकों को बाजार के उतार-चढ़ाव की समझ नहीं होती होती है। ऐसे में वे थोड़ा नुकसान होने पर घबरा जाते हैं। इस घबराहट में नए निवेशक अक्सर अपना पैसा निकालने का फैसला करते हैं, जिससे उन्हें नुकसान उठाना पड़ता है। इसलिए, यह हमेशा सलाह दी जाती है कि इक्विटी-ओरिएंटेड फंडों में निवेश सिस्टमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान (एसआईपी) के ज़रिए किया जाना चाहिए।

कम जोखिम वाले फंड में निवेश करें

बाजार के उतार-चढ़ाव के आदी होने के लिए, ज्यादा जोखिम वाले प्योर इक्विटी फंड के बजाय पहली बार निवेशकों के लिए बेहतर यह है कि वे संतुलित फंडों में निवेश करें। नए निवेशकों को ऐसे फंडों में निवेश करना चाहिए जहां जोखिम कम हो या हो भी तो ज्यादा नहीं। इस तरह के फंडों में बाजार में उतार-चढ़ाव के दौरान, प्योर इक्विटी फंड से कम उतार-चढ़ाव होता है। इससे नए निवेशकों के लिए घबराहट की स्थिति नहीं बनती है। इससे नए निवेशक बाजार में ज्यादा समय तक बने रह सकते हैं और बाजार के उतार-चढ़ाव को समझ सकते हैं। इसलिए, ज्यादा जोखिम वाले प्योर इक्विटी फंड से शुरू करने के बजाय, उन फंडों में निवेश करना बेहतर है, जो तुलनात्मक रूप से कम जोखिम वाले हैं।

निवेश करने से पहले फाइनेंशियल प्लानिंग करें

अगर कोई निवेशक सही फाइनेंशियल प्लानिंग द्वारा लॉन्ग टर्म गोल्स को हासिल करने के लिए इक्विटी-ओरिएंटेड फंडों में निवेश करना शुरू करता है, तो इस बात की संभावना बढ़ जाती है कि निवेशक बाजार में ज्यादा समय तक बने रहे। लंबी अवधि के गोल्स के लिए निवेश करने वाले निवेशक बाजार के छोटे-मोटे उतार-चढ़ाव को नजरअंदाज कर देते हैं। वहीं तुरंत रिटर्न हासिल करने के लिए निवेश करने वाले नए निवेशक बाजार के उतार-चढ़ाव से घबराकर तुरंत अपना पैसा निकाल लेते हैं। इसलिए, निवेश करने से पहले किस कैटेगरी के फंड में कितना निवेश करना है, यह तय करने के लिए फाइनेंशियल प्लानिंग करना बेहतर है।

युवाओं को निवेश करते समय इन बातों का रखना चाहिए ध्यान, वरना बढ़ सकती हैं मुश्किलें

स्वास्थ्य और शिक्षा की तरह, निवेश एक प्रमुख जीवन कौशल है जो किसी के वित्तीय भविष्य को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। खुशी की बात है कि महामारी के बाद दुनिया भर में युवा निवेशकों की संख्या में वृद्धि देखी गई है। ज्यादा रिटर्न पाने के सपने को लेकर युवा निवेशक अक्सर इंट्राडे ट्रेडिंग, स्केलिंग, पोजिशनल ट्रेडिंग और क्रिप्टोकरेंसी जैसे विकल्पों पर ध्यान केंद्रित करने लगते हैं। लेकिन इन सभी में रिस्क भी बहुत ज्यादा होता है। अगर आप युवा हैं और निवेश करने का सोच रहे हैं तो ये खबर आपके लिए है। आइये जानते हैं आपको निवेश से पहले या निवेश के समय किन बातों का ध्यान रखना चाहिए।

एक योजना बनाएं

सबसे पहले, अपने जीवन लक्ष्यों को परिभाषित करना होगा। क्योंकि यही आपके निवेश के लक्ष्यों को एक दिशा दिखाएगा। यह होमवर्क आपको स्टॉक, बॉन्ड, करेंसी, कमोडिटी, रियल एस्टेट, सोना और अन्य जगहों पर निवेश करने में अधिक मदद करेगा। एक अच्छी तरह से शोध की गई योजना मील के पत्थर साबित हो सकता है। आप तय करें कि आपको कितने सालों तक और किस चीज के लिए निवेश करना है। इसके आधार आप कोई स्कीम चुने और लगातार निवेश करते हैं।

जोखिम कम करें और निवेश में लाएं विविधता

रिस्क रिटर्न की अनिश्चितता को दर्शाता है। कम जोखिम वाली योजनाएं आमतौर कम रिटर्न देती हैं लेकिन बाजार के उतार-चढ़ाव के प्रति कम संवेदनशील होती हैं। ज्यादा जोखिम वाले स्कीम्स में आपको रिटर्न ज्यादा मिलता है लेकि बाजार के उतार-चढ़ाव के प्रति ये ज्यादा संवेदनशील नहीं होते हैं।

लॉन्ग-टर्म का सोचें

समय के साथ टिकाऊ संपत्ति बनाने के लिए लॉन्ग-टर्म इन्वेस्टमेंट काफी फायदेमंद होता है। शार्ट टर्म इन्वेस्टमेंट स्ट्रैटेजी तुरंत लाभ मिलने पर केंद्रित रहता है, जिसमें जोखिम बहुत ज्यादा होता है। निवेशक अपने निवेश को केवल 2-3 साल की अवधि के लिए रखते हैं जो महत्वपूर्ण रिटर्न अर्जित करने के लिए पर्याप्त समय नहीं है।

निवेश करने से पहले 'जान लें'

किसी भी एसेट में पैसे लगाने से पहले उसकी डायनामिक्स को समझना चाहिए। सुनी-सुनाई बातों या साथियों के दबाव के आधार पर निवेश न करें। किसी भी निवेश से पहले आपको उसके बारे रिसर्च जरूर करना चाहिए। ऊपर बताए गए निवेश-मंत्र युवा निवेशकों को उनके निवेश पर स्थायी रिटर्न दिलाने में मदद कर सकते हैं। वास्तव में, यह आपके भविष्य में निवेश करने का सही समय है ताकि आप अपने आने वाले समय में सही तरीके से फाइनेंशियल रूप से स्टेबल हो सके।

इमरजेंसी में करनी हो पैसों की जुगाड़ तो एलआईसी से लें लोन

सुविधा का फायदा, पर्सनल लोन से सस्ता और EMI की टेंशन नहीं

इमरजेंसी में पैसों की जरूरत है तो ज्यादातर लोग पर्सनल लोन का सहारा लेते हैं या फिर अपनी किसी पॉलिसी को तुड़वाकर पैसों का इंतजाम करते हैं। लेकिन अगर आपने LIC पॉलिसी ली है तो आप इस पॉलिसी पर भी लोन ले सकते हैं। एलआईसी पर लिया लोन आमतौर पर पर्सनल लोन की तुलना में सस्ता पड़ता है, साथ ही री-पेमेंट भी काफी आसान होता है। ऐसे में आपको हर महीने EMI चुकाने की टेंशन नहीं होती। यहां जानिए LIC की लोन सुविधा से जुड़े तमाम नियम और खूबियां...

लोन के फीचर्स

एलआईसी पॉलिसी पर मिलने वाला लोन सुरक्षित लोन की श्रेणी में आता है क्योंकि लोन गारंटी आपकी लाइफ इंश्योरेंस पॉलिसी होती है। ऐसे में बहुत पेपर वर्क की जरूरत नहीं होती और लोन जल्दी मिल जाता है। ग्राहक सिर्फ 3 से 5 दिन की अवधि में ही लोन की राशि प्राप्त कर सकता है।

एलआईसी पर लोन का एक फायदा तो ये है कि आपको अपनी पॉलिसी को सरेंडर नहीं पड़ता। ऐसे में आपको बीमा से मिलने वाले फायद खत्म नहीं होते हैं।

ये लोन पर्सनल लोन के मुकाबले सस्ता है, साथ ही इसे लेते समय प्रोसेसिंग फीस या हिडन चार्जेज नहीं लगते हैं। ऐसे में लोन की अतिरिक्त लागतों से बचत हो जाती है।

काफी आसान है रीपेमेंट

एलआईसी पॉलिसी पर अगर आप लोन लेते हैं तो इसका रीपेमेंट काफी आसान होता है। इसमें लोन चुकाने वाले को अच्छा खासा टाइम मिलता है क्योंकि लोन की अवधि न्यूनतम छह महीने से लेकर इंश्योरेंस पॉलिसी की मैच्योरिटी तक हो सकती है। ऐसे में ग्राहक के

लिए अच्छी बात ये है कि इस लोन पर हर महीने ईएमआई चुकाने की टेंशन नहीं होती। जैसे-जैसे पैसे जमा होते जाएं, आप उसके हिसाब से पैसे दे सकते हैं। लेकिन एक बात ध्यान रहे कि वार्षिक ब्याज इसमें जुड़ता रहेगा। अगर कोई ग्राहक 6 महीने की न्यूनतम अवधि के भीतर लोन का निपटान करता है, तो उसे 6 महीने की पूरी अवधि के लिए ब्याज का भुगतान करना होता है।

लोन चुकाने के 3 ऑप्शन

पूरे मूलधन को ब्याज के साथ चुकाएं।
बीमा पॉलिसी की मैच्योरिटी के समय क्लेम अमाउंट के साथ मूलधन का निपटान करें। ऐसे में अब आपको केवल ब्याज राशि चुकानी होगी।
सालाना ब्याज राशि चुकाएं और मूल राशि को अलग तरीके से चुकाएं।

लोन से जुड़े नियम

इंश्योरेंस पॉलिसी के एवज में लोन सिर्फ कुछ चुनिंदा पॉलिसी जैसे कि ट्रेडिशनल और एंडोमेंट पॉलिसी के एवज में ही मिलता है।
लोन की राशि सरेंडर वैल्यू के हिसाब से तय की जाती है। आपको पॉलिसी की सरेंडर वैल्यू का 80 से 90 फीसदी तक लोन मिल सकता है।

लोन पॉलिसी की ब्याज दर पॉलिसी होल्डर के प्रोफाइल पर निर्भर करती है। आमतौर पर ये 10 से 12 फीसदी तक होती है।

पॉलिसी पर लोन देते समय बीमा कंपनी आपकी पॉलिसी को गिरवी रख लेती है।

लोन वापस न करने पर या लोन की बकाया राशि पॉलिसी की सरेंडर वैल्यू से अधिक हो जाने पर कंपनी को आपकी पॉलिसी समाप्त करने का अधिकार है।

अगर आपकी बीमा पॉलिसी लोन चुकाने से पहले मैच्योर हो जाती है है तो आपकी राशि से बीमा कंपनी लोन की राशि काट सकती है।

लोन के लिए कैसे करें अप्लाई

पॉलिसी के बदले लोन लेने के लिए आप ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों तरह से अप्लाई कर सकते हैं। ऑफलाइन के लिए आपको एलआईसी ऑफिस में जाकर केवाईसी डॉक्यूमेंट्स के साथ लोन के लिए आवेदन करना होगा। वहीं ऑनलाइन अप्लाई करने के लिए LIC ई-सेवाओं के लिए रजिस्ट्रेशन करें। इसके बाद अपने अकाउंट में लॉग-इन करें। इसके बाद चेक करें कि आप बीमा पॉलिसी बदले लिए जाने वाले लोन को प्राप्त करने के लिए योग्य है या नहीं। यदि हैं, तो लोन की नियम, शर्तें, ब्याज दरें आदि के बारे में अच्छे से पढ़ लें। इसके बाद एप्लीकेशन सबमिट करें और KYC दस्तावेजों को ऑनलाइन अपलोड करें।

*निर्भर स्कीम चयन एवं बाजार जोखिम पर, निवेश करने से पहले ऑफर दस्तावेज पूर्णरूप से पढ़ लें।

बैंक लॉकर से जुड़े नियम आपको जरूर जानने चाहिए

बैंक लॉकर आपकी कीमती चीजों के लिए एक सुरक्षित और नियंत्रित माहौल देता है

जब बात कीमती सामानों को सुरक्षित रखने की होती है तो बैंक लॉकर एक पॉपुलर ऑप्शन होता है। बैंक लॉकर आपकी कीमती चीजों के लिए एक सुरक्षित और नियंत्रित माहौल देता है। तमाम बैंक चाहे वह पब्लिक सेक्टर हो या प्राइवेट सेक्टर , कस्टमर्स को लॉकर सुविधा मुहैया कराते हैं। इसके बदले बैंक को निर्धारित शुल्क देने होते हैं। हालांकि इसके कुछ नियम हैं जिनके बारे में जानना आपके हित में है। बैंकों में हाल के समय में नियमों में कुछ बदलाव भी हुए हैं। ऐसे में अपडेटेड रहना जरूरी है। आइए, हम यहां इससे जुड़े जरूरी बातों और प्रावधानों को समझ लेते हैं।

केवाईसी है जरूरी

बैंक लॉकर के लिए अप्लाई करते समय आपको बैंक में केवाइसी प्रक्रिया को पूरा करना जरूरी है। इसके बिना बैंक लॉकर के लिए परमिशन नहीं देते हैं। केवाईसी के होने से लॉकर को रेंट पर लेने वाले ग्राहक की डिटेल होती है और जब वह लॉकर एक्सेस करता है तो इसकी सूचना मिलती है। इससे पारदर्शिता बनी रहती है।

लॉकर साइज और टाइप

बैंक आपकी जरूरतों और उपलब्धता के मुताबिक लॉकर ऑफर करते हैं। इस बात का ध्यान हमेशा रखें कि लॉकर वहीं चुने जो आपकी जरूरतों के हिसाब से सही हो।

नॉमिनी का होना जरूरी

बैंकों ने एक नॉमिनी का नाम जरूरी कर दिया है जो कस्टमर की गैरमौजूदगी में लॉकर तक एक्सेस कर सकता है। इससे एक्सेस का ट्रांजैक्शन बिना किसी परेशानी के हो सकता है।

लॉकर का रेंट

जब कभी आप बैंक लॉकर के लिए अप्लाई कर रहे हों तो लॉकर के लिए पेमेंट फ्रीक्वेंसी और रेंटल चार्ज को अच्छी तरह जरूर समझ लें। बैंक की तरफ से लॉकर के रेंट और टाइमली पेमेंट की पॉलिसी भी जरूर समझ लें।

एग्रीमेंट है अहम

बैंक लॉकर पाने से पहले बैंक के साथ आपको एक एग्रीमेंट साइन करना होता है। यह एग्रीमेंट नॉन-ज्यूडिशियल स्टांप पेपर पर होना चाहिए। इस डॉक्यूमेंट में जरूरी शर्तें होती हैं। इसे आपको अच्छी तरह पढ़नी चाहिए। एग्रीमेंट में लॉकर एक्सेस की प्रक्रिया, एक्सेस टाइम और पहचान होने चाहिए। लॉकर कब तक वैलिड है, यह भी होना चाहिए।

अलर्ट फॉर लॉकर एक्सेस

बैंक आपके लॉकर में रखे सामानों की सुरक्षा के लिए कई सुरक्षा मानक अपनाए हैं। यूनिटी स्मॉल फाइनेंस बैंक के मुताबिक, इनमें बायोमीट्रिक एक्सेस, सीसीटीवी कैमरा और लॉग रिकॉर्ड्स शामिल हैं। किसी भी संदिग्ध गतिविधियों या अनऑथोराइज्ड एक्सेस को लेकर आपको अलर्ट रहना चाहिए। अगर आपको कुछ लगे तो बैंक को तुरंत इसकी सूचना दें।

चोरी या आग की स्थिति में मुआवजा

ज्यादातर बैंक, लॉकर की सेफ्टी के साथ-साथ लॉकर में रखे सामानों के इंश्योरेंस भी ऑफर करता है। यह इंश्योरेंस चोरी या आग की स्थिति में लॉकर में रखे सामानों की रक्षा करता है। इसलिए इंश्योरेंस कवरेज को अच्छी तरह समझ लें।

ज्वाइंट सेविंग अकाउंट के फायदे और नुकसान जानते हैं आप! खाता खोलने से पहले समझिए जरूरी बातें

सेविंग अकाउंट या बैंक अकाउंट आपके वित्तीय लेन-देन के लिए एक जरूरी साधन है। सेविंग अकाउंट को अकेला व्यक्ति भी खोल सकता है और दो लोग मिलकर यानी ज्वाइंट अकाउंट भी खोला जा सकता है। ज्वाइंट सेविंग अकाउंट एक वित्तीय उपकरण है जो कई व्यक्तियों, जैसे जोड़े, परिवार के सदस्यों, या व्यावसायिक भागीदारों को अपने संसाधनों को इकट्ठा करने और एक साथ बचत करने की परमिशन देता है। अगर आप ज्वाइंट सेविंग अकाउंट ओपन कराते हैं तो इसके अपने फायदे और नुकसान दोनों होते हैं। अप्लाई करने ले पहले अगर आप इन बातों को समझ लेते हैं तो आगे आपके लिए चीजें आसान हो जाती हैं और आपकी जानकारी में होती हैं। आइए, ज्वाइंट सेविंग अकाउंट के नफा नुकसान को यहां समझते हैं।

ज्वाइंट सेविंग अकाउंट के फायदे

एक ज्वाइंट सेविंग अकाउंट खाताधारकों के बीच साझा वित्तीय जिम्मेदारी को बढ़ावा देता है। यह कई व्यक्तियों को एक सामान्य लक्ष्य के लिए योगदान करने की अनुमति देता है, चाहे वह घर पर डाउन पेमेंट के लिए बचत हो, पारिवारिक अवकाश हो, या इमरजेंसी फंड हो। यह साझा जिम्मेदारी वित्तीय पारदर्शिता, खुले कम्यूनिकेशन और टीम वर्क की भावना को बढ़ावा दे सकती है। इसके अलावा, ज्वाइंट सेविंग अकाउंट, संसाधनों को पूल करना और बचत को अधिकतम करना आसान बनाते हैं। कई खाताधारकों की इनकम और योगदान के संयोजन से एक बड़ा समग्र संतुलन और संभावित रूप से उच्च ब्याज आय हो सकती है।

एक ज्वाइंट सेविंग अकाउंट जोड़ों या परिवार के सदस्यों के लिए, खर्च के प्रबंधन को आसान बना सकता है। यह धनराशि जमा करने और घरेलू बिल या बच्चे की देखभाल की लागत जैसे साझा खर्चों का भुगतान करने के लिए एक केंद्रीय स्थान प्रदान करता है। इससे पर्सनल अकाइंट के बीच लगातार ट्रांसफर की जरूरत कम हो सकती है और अलग-अलग वित्त के प्रबंधन के प्रशासनिक बोझ को कम किया जा सकता है। एयू स्मॉल फाइनेंस बैंक के मुताबिक, ज्वाइंट सेविंग अकाउंट संयुक्त वित्तीय योजना और लक्ष्य निर्धारण को प्रोत्साहित करते हैं। खाताधारक एक व्यापक बजट बनाने, विशिष्ट लक्ष्यों के लिए धन आवंटित करने और सामूहिक रूप से प्रगति की निगरानी करने के लिए मिलकर काम कर सकते हैं। यह वित्तीय अनुशासन बढ़ा सकता है और कुलमिलाकर वित्तीय स्वास्थ्य को मजबूत कर सकता है।

ज्वाइंट सेविंग अकाउंट के नुकसान

ज्वाइंट सेविंग अकाउंट की प्राथमिक कमियों में से एक धन पर व्यक्ति गत नियंत्रण का नुकसान है।

हर अकाउंट होल्डर के पास अकाउंट पर समान अधिकार हैं, जिसका अर्थ है कि कोई भी अकाउंट होल्डर यानी खाताधारक दूसरों की सहमति के बिना धन निकाल या ट्रांसफर कर सकता है। अगर विश्वास की कमी है या अगर एक खाताधारक धन का गलत प्रबंधन करता है तो इससे परेशानी हो सकती है। ज्वाइंट सेविंग अकाउंट कभी-कभी संघर्ष और असहमति की वजह बन सकते हैं, खासकर अगर खाताधारकों के बीच अलग-अलग वित्तीय प्राथमिकताएं या खर्च करने की आदतें हों। किसी भी मुद्दे का तुरंत समाधान करने और गैर जरूरी विवादों से बचने के लिए क्लियर कम्यूनिकेशन चैनल सेट अप करना, ज्वाइंट वित्तीय लक्ष्य तय करना और नियमित रूप से अकाउंट की समीक्षा जरूरी है।

ज्वाइंट सेविंग अकाउंट में, हर खाताधारक खाते से जुड़े किसी भी लोन या दायित्व के लिए समान रूप से उत्तरदायी होता है। अगर एक खाताधारक पर कर्ज है या उसे कानूनी कार्रवाई का सामना करना पड़ता है, तो यह संभावित रूप से ज्वाइंट सेविंग अकाउंट में रखे गए धन को प्रभावित कर सकता है। ज्वाइंट सेविंग अकाउंट से जुड़े कानूनी निहितार्थ और संभावित जोखिमों को समझना महत्वपूर्ण है, खासकर जटिल वित्तीय स्थितियों या व्यावसायिक साझेदारी में।

ज्वाइंट सेविंग अकाउंट में इन बातों का रखें ध्यान

जब ज्वाइंट सेविंग अकाउंट हो तो इस अकाउंट की सफलता के लिए विश्वास और खुली बातचीत जरूरी है। सभी खाताधारकों को अपनी भूमिकाओं, जिम्मेदारियों और वित्तीय अपेक्षाओं की स्पष्ट समझ होनी चाहिए। वित्तीय लक्ष्यों, योगदान और निकासी के बारे में नियमित चर्चा से विश्वास बनाने और गलतफहमी को कम करने में मदद मिल सकती है। दोनों लोग मिलकर यह तय करें कि ज्वाइंट सेविंग अकाउंट कैसे मैनेज और एक्सेस किया जाएगा। एक बात ध्यान रखें कि ज्वाइंट सेविंग अकाउंट खोलने से पहले खाताधारकों की वित्तीय अनुकूलता का आकलन जरूर करें। उनकी वित्तीय आदतों, लक्ष्यों और बचत और खर्च के प्रति नजरिया का मूल्यांकन करें।

निर्भर स्कीम चयन एवं बाजार जोखिम पर, निवेश करने से पहले ऑफर दस्तावेज पूर्णरूप से पढ़ लें।

होम लोन के बोझ से पाना चाहते हैं जल्द मुक्ति, करें ये 9 उपाय

अगर आपने होम लोन ले रखा और ईएमआई चुकाते-चुकाते परेशान हैं और जल्द मुक्ति चाहते हैं तो कुछ उपाय कर सकते हैं। हम आपको वो उपाय बता रहे हैं।

एकमुश्त भुगतान करें

होम लोन जल्द चुकाना चहाते हैं तो लोन लेने से पहले जितना अधिक हो सके, उतना डाउन पेमेंट करें, जिससे ऋण की अवधि के दौरान ब्याज कम भुगतान करना होगा। ईएमआई भी कम आएगी।

छोटी ऋण अवधि चुनें

होम लोन 20 साल के लिए लेने के बजाय 15 साल का चुनें। ऐसा करने से अधिक ईएमआई चुकान होगा लेकिन आप ऋण का भुगतान जल्द कर लेंगे और ब्याज बड़ी पर बचत भी करेंगे।

एक्स्ट्रा मंथली पेमेंट करें

हर महीने ईएमआई के साथ कुछ रकम एक्स्ट्रा भुगतान करें। हर महीने थोड़ा और योगदान करने से लोन के मूलधन में काफी कमी आती है और रीपेमेंट अवधि कम हो जाती है।

द्वि-साप्ताहिक भुगतान का विकल्प चुनें

कुछ बैंक द्वि-साप्ताहिक भुगतान की अनुमति देते हैं। इससे आपके द्वारा सालाना किए जाने वाले भुगतान की संख्या बढ़ जाती है, जिससे पुनर्भुगतान प्रक्रिया आसान हो जाती है।

कम ब्याज दर पर लोन ट्रांसफर करें

अगर आपने जिस बैंक से होल लोन लिया है और वह अधिक ब्याज वसूल रहा है तो कम ब्याज के लिए किसी नए बैंक में अपने होम लोन को ट्रांसफर करें। इससे आपके मासिक भुगतान और ऋण अवधि के दौरान भुगतान किए गए कुल ब्याज में काफी कमी आ सकती है।

बोनस का पैसे लोन चुकाने में इस्तेमाल करें

अगर आपको बोनस, टैक्स रिफंड, या कहीं और से पैसा मिलता है तो इसे अपने होम लोन चुकाने में इस्तेमाल करें। इससे आपकी बकाया राशि कम हो जाती है और आपको ब्याज पर बचत होती है।

नया कर्ज लेने से बचें

अपना होम लोन चुकाते समय अतिरिक्त कर्ज लेने से बचें। यह आपके वित्तीय बोझ से बचने में मदद करेगा।

अपने बजट की नियमित समीक्षा करें

लगातार अपने बजट का आकलन करें और उन क्षेत्रों की पहचान करें जहां आप खर्च कम कर सकते हैं। इससे आपके पैसे बचेंगे और आसानी से होम लोन जल्द चुका पाएंगे।

अपने बैंक के संपर्क में रहें

अपने लोन को पूर्व भुगतान के लाभों के बारे में खुद को अपडेट रखें। अपने बैंक से परामर्श लें और बेस्ट विकल्प का चयन करें। इन उपायों को कर आप जल्द होम लोन के बोझ से मुक्त हो सकते हैं।

कार इंश्योरेंस

सस्ते प्लान के चक्कर में कहीं ठगी का शिकार न हो जाएं, इंश्योरेंस लेते समय जरूर चेक करें ये 7 बातें

पिछले कुछ सालों में काफी तेजी से कार की तादाद बढ़ी है। आज के समय में मिडिल क्लास परिवार भी ईएमआई के जरिए आसानी से कार खरीद लेता है। कार खरीदने के बाद अगला स्टेप इंश्योरेंस का होता है। तेजी से कार इंश्योरेंस की मांग के बीच तमाम स्कैमर्स भी भीड़ का हिस्सा बन गए हैं। ये डिस्काउंट पर सस्ते इंश्योरेंस प्लान का लालच देकर लोगों को अपने जाल में फंसाते हैं। आप इस तरह की ठगी के शिकार न हों, इसके लिए जरूरी है कि आप कुछ ऐसी बातें जान लें, जिन्हें इंश्योरेंस लेते समय चेक करना बहुत जरूरी है।

इंश्योरेंस पॉलिसी खरीदते समय जरूर चेक करें ये चीजें

1- इंश्योरेंस के मामले में किसी भी तरह की ठगी से बचने के लिए आपको पॉलिसी खरीदते समय कुछ बातों को जरूर जांच लेना चाहिए जैसे-

2- इंश्योरेंस पॉलिसी के पेपर्स को ध्यान से पढ़ें। उस पर दी गई जानकारी को एक बार ऑनलाइन भी जरूर चेक करें।

3- IRDAI के पोर्टल पर उस कंपनी का नाम चेक करें, जिससे आप बीमा कराने जा रहे हैं।

4- आपकी इंश्योरेंस पॉलिसी पर UID नंबर जरूर चेक करें। UID नंबर IRDAI द्वारा जारी किया जाता है। अगर आपकी पॉलिसी में ये नंबर नहीं है तो आपकी पॉलिसी भी नकली है।

5- हर इंश्योरेंस पॉलिसी के लिए एक QR कोड जरूरी होता है। इस क्त कोड को स्कैन करके आप पॉलिसी की डीटेल्स जान सकते हैं और ये पता कर सकते हैं कि आपकी पॉलिसी असली है या नहीं।

6- पॉलिसी खरीदते समय पेमेंट ऑनलाइन या चेक से करें और इसे किसी एजेंट के नाम पर करने की बजाय कंपनी के नाम पर करें।

7- कंपनी के कस्टमर केयर से पॉलिसी से जुड़ी जानकारी भी लें।

समझिए कितनी तरह के होते हैं कार इंश्योरेंस

थर्ड पार्टी इंश्योरेंस- थर्ड पार्टी इंश्योरेंस लेना सभी के लिए अनिवार्य है। ये पॉलिसी होल्डर और इंश्योरेंस कंपनी के बीच एक तरह का कानूनी समझौता होता है। इसमें कंपनी पॉलिसी होल्डर से वादा करती है कि किसी भी एक्सीडेंट के समय हुए सभी तरह के नुकसान की भरपाई कंपनी करेगी। इसके बदले में कंपनी पॉलिसी होल्डर से प्रीमियम चार्ज करती है।

ओन डैमेज इंश्योरेंस- ये पॉलिसी लेना अनिवार्य नहीं है। ये एक ऐसी पॉलिसी है जो इंश्योर्ड कार को हुए नुकसान को कवर करती है। इसमें शारीरिक चोट या मृत्यु के लिए भी कवरेज दिया जाता है। साथ ही प्राकृतिक आपदाओं और दंगे की स्थिति में होने वाली क्षति को भी कवर किया जाता है।

कॉम्प्रिहेंसिव कार इंश्योरेंस- इस पॉलिसी को लेना भी अनिवार्य नहीं होता। इसमें भूकंप, बाढ़, चोरी, आग आदि जैसी अप्रत्याशित घटनाओं के कारण आपके वाहन को होने वाले नुकसान के लिए कवरेज दिया जाता है।

डिस्क्लेमर

निवेश पत्रिका में प्रकाशित लेखों के माध्यम से बाजारों एवं कॉरपोरेट जगत के घटनाक्रमों की निष्पक्ष तस्वीर पेश करने का प्रयास किया गया है। निवेश पत्रिका के नियंत्रण एवं जानकारी से परे परिस्थितियों के कारण वास्तविक घटनाक्रम भिन्न हो सकते है। निवेश पत्रिका में प्रकाशित रिपोर्टों के आधार पर पाठकों द्वारा किए जाने वाले निवेश और लिए जाने वाले करोबारी निर्णयों के लिए निवेश पत्रिका कोई जिम्मेदारी नहीं लेता है। पाठकों से स्वयं निर्णय लेने की अपेक्षा की जाती है।

- संपादक: रमेशचन्द मालू

Invest in Tax Saving (ELSS) Schemes, and 54 EC Bonds

Invest for 80C ELSS (Start SIP From Today), Capital Gain 54EC Bonds.

Invest With Better Mutul Fund Distributor Having Experience of 30 Years

Mob.: 98290-06801/98290-99899/98290-40424

निवेशकों को वित्तीय सलाह

आपका शुभ चिंतक वित्तीय सलाहकार आपको सदा सही मार्गदर्शन करके आपके निवेश को आगे बढ़ाएगा। आपका वित्तीय सलाहकार अच्छा शिक्षित हो, ईमानदार हो एवं अनुभवी हो। आपके वित्तीय सलाहकार को यदि 10 वर्ष का अनुभव है तो सबसे अच्छा है। ध्यान रहे, अपने प्रतिफल एवं कमीशन के लाभ के चक्कर में नए-नए वित्तीय सलाहकार बदलकर आप अपनी गाढ़ी कमाई की बचत को जोखिम में नहीं डालें।

आधुनिक युग अर्थ प्रधान युग है। इस युग में आगे उन्नति हेतु अपने बच्चों को सभी अभिभावक उच्च कोटि की शिक्षा दिलाकर उनके उज्जवल भविष्य को संवारने की पूर्ण कोशिश करते हैं। इस युग में शिक्षा खर्च भी बहुत अधिक हो गया है। इसके लिए अभिभावकों के लिए जागरूक रहकर अपने बच्चों को प्रेरित कर उच्च शिक्षा दिलाना परम कर्तव्य बन जाता है। करीब 10वीं कक्षा तक तो अभिभावक अपने बच्चों को आसानी से पढ़ा लिखा पाते हैं। इसके बाद की पढ़ाई खर्च में उनको बुछ कठिनाई महसूस होने लगती है। इसका प्रमुख कारण होता है- हमने एक अभिभावक की तरह नहीं सोचा। हमें अपनी अपनी कमाई से कुछ बचत करके अपने बच्चों के भविष्य व उच्च शिक्षा के लिए कोई निश्चित बचत नहीं की।

इसके लिए बच्चों को भी बचत हेतु प्रेरित कर सकते हैं। उनको गुल्लक देकर उनको अपनी मासिक कमाई में से कुछ पैसे देकर एकत्रित करने की भावना को जागरूक करना चाहिए। अभिभावक कमाई करते हैं, उससे अधिक सोच विचार कर खर्च करने में भी दिमाग लगाकर बचत का ध्यान रखें। सफल जीवन के लिए बचत एक आवश्यक अंग है। हमारी बचत की हुई राशि का हमें अधिक से अधिक प्रतिफल मिले, इसके लिए हमें अच्छे वित्तीय सलाहकार से राय लेकर काम शुरू करना चाहिए। पुराने जमाने में व्यक्ति बचत को केवल बैंक में सेविंग खाता या पोस्ट ऑफिस में रेकरिंग खाता खोलकर करते थे परंतु इनका प्रतिफल बहुत कम बैठता है क्योंकि यह लोग भी बड़े-बड़े उद्योगों को ऋण देकर कमाई करते हैं। इस हेतु आप बच्चे के जन्म से ही उसके लिए निवेश कर सकते हैं। जब

वह बड़ा होगा तब तक उसकी उच्च शिक्षा एवं भविष्य के लिए एक अच्छी खासी रकम आपके पास होगी।

इसके लिए वर्तमान समय में बड़े-बड़े उद्योगपतियों ने म्यूचुअल फंड बनाकर निवेशकों को अधिक से अधिक कमाई में प्रतिफल देने की योजना बनाई है क्योंकि साधारण व्यक्ति शेयर बाजार में अपनी बचत को अनुभव नहीं होने से सही तरीके से बढ़ा नहीं पाता। इसलिए उसे म्यूचुअल फंड चुनने के लिए वित्तीय सलाहकार से जानकारी लेकर अपनी बचत की राशि को निवेश करना चाहिए।

इसके लिए वित्तीय सलाहकार आपकी बचत को इक्विटी फंड, बैलेंस फंड एवं डेट फंड के बारे में समझाकर निवेश कराएगा। इन फंडों से राशि निकालकर दूसरे फंडों में भी डालकर अधिक प्रतिफल लिया जा सकता है। यह वित्तीय सलाहकार से जानकारी लेकर कर सकते हैं।

वित्तीय सलाहकार आपको अन्य कई प्रकार की योजना भी बताएगा। आप अपनी बचत एवं उद्देश्य हेतु किसी को भी अपना सकते हैं जैसे-

1. बच्चों की उच्च शिक्षा के लिए।
2. मकान, कार खरीदने हेतु।
3. बच्चे के परिपक्व होने पर उसको व्यापार हेतु एकत्रित राशि देना।
4. अपनी बेटी के विवाह हेतु खर्च करने के लिए बचत की हुई राशि की उपयोग।
5. वृद्धावस्था में घर चलाने के लिए एक निश्चित राशि प्रतिमाह मिलती रहे।

आप इसके लिए अपने वित्तीय सलाहकार से सलाह लेकर किसी भी योजना में एसआईपी अपना सकते हैं। इसके लिए मैं आपको एक बात का पूर्ण ध्यान रखने की सलाह दूंगा कि आप चाहे कम राशि के साथ बचत की शुरूआत करें परंतु उसको नियमित रखें एवं पूर्ण परिपक्व होने तक चलाएं। एसआईपी में नियमित एवं लंबी अवधि में की हुई बचत आपको हर हालत में अच्छा प्रतिफल देगी क्योंकि एसआईपी की योजना से शेयर बाजार की हर तेजी- मंदी में निवेशक को यूनिट्स मिलते रहते हैं। इससे सब जोखिम कवर हो जाती है।

वित्तीय सलाहकार से सलाह लेकर निवेशक

जब लक्ष्य नजदीक हो तो अपनी राशि को एक दूसरे फंड में बदल भी सकता है तथा एक से दूसरी स्कीम में भी परिवर्तित कर सकता हैं म्यूचुअल फंडों में अनेकों प्रकार के टूल्स होते हैं जिनके द्वारा आप जोखिम क्षमता के अनुसार अन्य स्कीम में परिवर्तित कर सकते हैं इसके लिए आपको अपने वित्तीय सलाहकार से बराबर सम्पर्क बनाए रखना चाहिए। सही वित्तीय सलाहकार चुनकर ही आप अपनी कठिन कमाई की हुई बचत को सुरक्षित रख सकेंगे एवं अपने उद्देश्यों को सफल कर पाएंगे। जिस प्रकार कहा जाता है कि गुरु बिना ज्ञान नहीं है, उसी प्रकार आपका शुभ चिंतक वित्तीय सलाहकार आपको सदा सही मार्गदर्शन करके आपके निवेश को आगे बढ़ाएगा। आपका वित्तीय सलाहकार अच्छा शिक्षित हो, ईमानदार हो एवं अनुभवी हो।

आपके वित्तीय सलाहकार को यदि 10-20 वर्ष का अनुभव है तो सबसे अच्छा है। ध्यान रहे, अपने प्रतिफल एवं कमीशन के लाभ के चक्कर में नए- नए वित्तीय सलाहकार बदलकर आप अपनी गाढ़ी कमाई की बचत को जोखिम में नहीं डालें। यदि अच्छे वित्तीय सलाहकार को उसका उचित मेहनताना (फीस) देकर भी हमें उससे पूर्ण संतुष्टि मिले, अच्छी सेवा मिले तो उसके साथ निवेशकों को बराबर काम करते रहना चाहिए।

PPF और ELSS में क्या अंतर है? निवेश से पहले समझें ये जरूरी बातें फैसला लेना होगा आसान

निवेश के यूं तो कई विकल्प हैं, लेकिन पब्लिक प्रोविडेंट फंड या पीपीएफ और इक्विटी लिंक्ड सेविंग स्कीम या ईएलएसएस निवेशकों में खासा पॉपुलर है। इन दोनों में निवेश को लेकर समझ होना जरूरी है, एक सोच-समझकर निवेश का फैसला आप तभी ले सकेंगे। पीपीएफ एक सरकार समर्थित निवेश योजना है। यह निवेशकों को आयकर अधिनियम की धारा 80सी के तहत कर लाभ के साथ गारंटीकृत रिटर्न प्रदान करता है। निवेशक सरकार द्वारा तय दरों के अनुसार पीपीएफ पर ब्याज कमाते हैं। जबकि ईएलएसएस इक्विटी लिंक्ड सेविंग स्कीम को संदर्भित करता है और एक प्रकार का म्यूचुअल फंड है जो इक्विटी में निवेश करता है। ईएलएसएस द्वारा पैदा रिटर्न बाजार के प्रदर्शन पर निर्भर करता है। इसके अतिरिक्त, ईएलएसएस निवेशकों को आयकर लाभ भी प्रदान करता है।

दोनों में क्या हैं मुख्य अंतर

सुरक्षा के मामले में समझें: पीपीएफ सरकार द्वारा समर्थित है और इसलिए पूंजी की सुरक्षा और निश्चित रिटर्न भी प्रदान करता है। दूसरी तरफ, ईएलएसएस को बाजार जोखिम का सामना करना पड़ता है क्योंकि वे इक्विटी बाजारों में निवेश करते हैं जो अस्थिर और तुलनात्मक रूप से जोखिम भरे होते हैं।

रिटर्न के मामले में: पीपीएफ पर लागू ब्याज दर सरकार द्वारा निर्धारित की जाती है। इस प्रकार, वह स्थिर हैं। हालांकि, ईएलएसएस के साथ आप इक्विटी में निवेश कर सकते हैं और हाई रिटर्न अर्जित करने का मौका पा सकते हैं। साथ ही, यह लंबी अवधि में मिश्रित भी होता है।

निवेश को बंद करने के मामले में अंतर : पीपीएफ निवेश 15 साल की लॉक-इन अवधि के साथ आता है जो काफी अधिक है। निवेशकों को 5 साल पूरे होने के बाद ही आंशिक निकासी का विकल्प मिलता है। दूसरी तरफ, ईएलएसएस सिर्फ 3 साल की लॉक-इन अवधि के साथ आता है।

लिक्विडिटी को लेकर अंतर: बेशक पीपीएफ लंबी लॉक-इन अवधि के साथ आता है, लेकिन आप अपना खाता खोलने के 5 साल बाद अपने निवेश की आंशिक निकासी का विकल्प चुन सकते हैं। ईएलएसएस में निवेश करने से हाई लेवल की लिक्विडिटी का आनंद लिया जा सकता है क्योंकि लॉक-इन अवधि बहुत कम है।

टैक्स के मामले में कितना अलग: पीपीएफ खाते में जमा राशि, अर्जित ब्याज और परिपक्वता राशि सभी आयकर अधिनियम की धारा 80सी के तहत टैक्स फ्री हैं। इसी तरह, सालाना 1.5 लाख रुपये तक के ईएलएसएस निवेश को भी धारा 80सी के तहत कर से छूट दी गई है। हालांकि, ईएलएसएस निवेश पर अर्जित रिटर्न सिर्फ 1 लाख रुपये तक टैक्स फ्री है। 1 लाख रुपये से ऊपर के रिटर्न को लॉन्ग-टर्म कैपिटल गेन्स (LTCG) माना जाता है और इस पर 10% टैक्स की दर से टैक्स लगता है।

Mutual fund investment are subject to market risk, read all scheme related document carefully

स्वतत्वाधिकारी, प्रकाशक व मुद्रक रमेश चन्द मालू द्वारा मोहन शर्मा एण्ड कंपनी प्रा.लि.ए-10, सुदर्शनपुरा औधोगिक क्षेत्र जयपुर से मुद्रित एवं 103 प्रथम मंजिल, बृज अनुकम्पा, बीएसएनएल के सामने, अशोक मार्ग, सी-स्कीम जयपुर-302001 से प्रकाशित। सम्पादक : रमेश चन्द मालू मो. 98290-40524, 98290-66601
ई-मेल : niveshpatrika@mftoday.com वेबसाईट www.mftoday.com